ज्ञान तत्व 172,

(क) लेख, भाजपा की संभावनाओं मे आतंकवाद की उपयोगिता।

(ख) गोधरा रेल दुर्धटना को आक्रमण लिखने पर प्रश्न और उत्तर ।

(ग) अरूधन्ती राय द्वारा संसद भवन पर आक्रमण पर संदेह पर प्रश्न और उत्तर ।

(घ) प्रचार माध्यमों द्वारा झूठ को सच प्रमाणित करने संबंधी मेरे लेख पर प्रश्न और उत्तर ।

(च) रवीन्द्र सिंह पत्रकार द्वारा सिंघला जी का आलोचना और उत्तर ।

(छ) प्रहलाद गिरी द्वारा शराब मुक्ति पर सुझाव और उत्तर ।

(ज) अमर सिंह आर्य द्वारा पांच प्रश्न और संक्षिप्त उत्तर ।

(झ) धर्मशील चतुर्वेदी द्वारा गांधी के आर्थिक चिंतन पर विचार और मेरा उत्तर ।

(ट) कृष्ण कुमार सोमानी द्वारा पंचायती व्यवस्था में भ्रष्टाचार बढने की आशंका और उत्तर ।

(क) भाजपा की संभावनाओं मे आतंकवाद की उपयोगिता

भारतीय राजनैतिक शासन व्यवस्था मे अब न साम्यवाद का कोई भविष्य है न समाजवाद का । पूरी व्यवस्था आर्थिक आधार पर पूॅजीवाद की दिशा मे एक तरफा जा रही है जिसमें वामपंथी समाजवादी यदा कदा आलोचना से आगे नही बढ पाते ।

पूॅजीवादी व्यवस्था को निर्णायक बहुमत के बाद भी उनके बीच आपसी सत्ता संधर्ष उन्हे कांग्रेस और भाजपा के रूप मे दो गुटों मे बांटकर रखता है । यह सत्ता संधर्ष इन दोनो को अल्प मत मे लाकर साम्यवादियो, समाजवादियो तथा कुछ अन्य ढुलमुल दलों के साथ तालमेल के लिये मजबूर करता रहता है । यह तालमेल ही संप्रग और राजग नाम से पूरी राजनीति को दो ध्रुवों मे विभाजित करता है जिसमें एक का नेतृत्व कांग्रेस के पास और दूसरे का भाजपा के पास रहता आया है। अन्य सभी दल ढुलमुल शब्द के अनुसार हमेशा ढुलमुल ही रहा करते है जो तात्कालिक परिस्थितियों के आधार पर कभी भी किसी के भी साथ किसी भी सीमा तक झुककर या अकडकर तालमेल करते रहते है। इसी तालमेल की संभावना मे ऐसे ढुलमुल दलों के नेता प्रधानमंत्री बनने तक के स्वप्न भी देखते रहते है और कभी कभी ऐसा सपना सच भी हो जाने के कारण ऐसी संभावनाओं को जीवित रखता है।

छ माह पूर्व तक कांग्रेस पार्टी वामपंथियों के दबाव के कारण अपनी स्वाभाविक दिशा छोडकर लडखडाने के लिये मजबूर थी । साम्प्रदायिकता के मामले मे निर्लज्ज मुस्लिम तुष्टीकरण के परिणाम स्वरूप सच्चर आयोग भी बनाना पडा और राष्ट्रीय संसाधनो पर मुसलमानो का पहला अधिकार जैसी बात भी कहनी पडी। आतंकवाद के मामले मे भी कांग्रेस बहुत सतर्क कदम उठाने को मजबूर रहती थी। हर दो चार महिने में मुस्लिम आतंकवादी कही न कही अपना विस्फोट करके बेगुनाहों का खून कर देते थे और सरकार धिसे पिटे बयानों से आगे बढ नही पाती थी। आर्थिक मसले मे भी कांग्रेस परेशान थी। मंहगाई का ऐसा प्रचार हो रहा था कि कोई समस्या न होते हुए भी मंहगाई को समस्या के रूप मे स्वीकार करना पडता था। बिल्कुल स्पष्ट दिख रहा था कि कांग्रेस पार्टी का भविष्य अंधकार मय है और कांग्रेस पार्टी के स्थान पर भाजपा मजबूत होकर उभरेगी। क्योकि उस समय मंहगाई से भी ज्यादा मजबूत मुददा मुस्लिम आतंकवाद था और दो तीन महिने मे मुस्लिम आतंकवादी ऐसी आतंकवादी धटनाओं का रिन्युअल करके भाजपा का ग्राफ उपर कर दिया करते थे। उस समय तो भाजपा इतनी गदगद थी कि वह कांग्रेस को परेशान करने के लिये वामपंथियो तक से भी हां मे हां मिलाने मे लग जाया करती थी।

एकाएक वातावरण बदला। वामपंथियों पर कांग्रेस की निर्भरता खत्म हुई। कांग्रेस पार्टी कुछ संतुलित हुई। आर्थिक मंदी के हल्ले ने मुद्रा स्फीति को आसमान से पटककर जमीन पर ला दिया। मंहगाई का गुब्बारा पिचक गया। किन्तु मुस्लिम आतंकवाद फिर भी एक समस्या बना हुआ था। भाजपा चाहे कुछ करे या न करे परन्तु मुस्लिम आतंकवादी स्वय ही भाजपा के वोट बढा दिया करते थे। एकाएक कांग्रेस पार्टी ने मुस्लिम आतंकवाद के मुददे पर यू टर्न लिया । वाटला हाउस धटना को बडी सुझ बूझ से उसने लपक लिया। सभी वामपंथी , मानवाधिकारी, मुस्लिम नेता यहॉ तक कि कुछ कांग्रेसी भी दबे छिपे छाती पीटते रह गये किन्तु कांग्रेस ने किसी

की एक न सुनी। अन्त मे तो अन्तुले जी तक को नकाब हटाकर मैदान मे आना पडा किन्तु कांग्रेस अपने स्टैन्ड पर मजबूती से डटी रही। आतंकवाद के मुददे पर उसने नक्सलवाद के विरूद्ध भी अपनी रणनीति बदली। उसने भारत की आम जनता को एक नया संदेश देना शुरू किया कि यदि आतंकवाद किसी हद को पार कर जाता है तो कांग्रेस पार्टी अपने दलीय हितो से उपर उठकर भी राष्ट्र हित मे निर्णय कर सकती है । स्वाभाविक ही था कि चुनावो के पूर्व आतंकवाद चुनाव का मुददा न बने इसी मे कांग्रेस का दलीय हित था और कांग्रेस पार्टी ने इसका भरपूर लाभ उठाया। ऐसे ही कठिन वातावरण मे प्रज्ञा पुरोहित प्रकरण सामने आ गया। भाजपा के सामने दुविधा पैदा हो गई। उसने तत्काल आतंकवाद के विरूद्ध स्टैन्ड लिया और कहा कि आतंकवाद आतंकवाद ही होता है चाहे वह मुस्लिम हो या हिन्दू या नक्सलवादी। किन्तु जल्दी ही उसे आभास हुआ कि प्रज्ञा पुरोहित का विरोध करना उसे और मुश्किल मे डाल सकता है तो उसने अपना स्टैन्ड बदल लिया और कहना शुरू किया कि हिन्दू आतंकवादी हो ही नही सकता। भाजपा यह भूल गई कि उसकी यह दलील बिल्कुल ही बचकाना है । यदि यह मान लिया जावे तो भाजपा की नजर मे नक्सलवादी या तमिल टाइगर्स या तो हिन्दू नही है या आतंकवादी नही है। प्रज्ञा पुरोहित आतंकवादी है या नही इसका अन्तिम निर्णय तो बाद मे आयगा किन्तु भाजपा का कथन झूठ है इसके लिये तो जॉच की जरूरत नही। कुछ नये समाचार तो यहॉ तक आये है कि पाकिस्तान की आइ एस आई से संध परिवार के उच्च स्तरीय पदाधिकारियो की मिलीभगत की प्रज्ञा पुरोहित टीम को जानकारी ऐसे कथन का कारण बनी हो। कुछ भी हो किन्तु भाजपा के लिये यह प्रकरण बहुत नुकसान देह सिद्ध हुआ।

ऐसे कठिन समय मे बम्बई की आतंकवादी धटना ने तो भाजपा की कमर ही तोड कर रख दी। भारत मे चुनाव जीतने के लिये मुस्लिम आतंकवाद एक अच्छा मुदा था। कांग्रेस पार्टी ने बहुत चालाकी से मुस्लिम आतंकवाद को एक पाकिस्तानी आतंकवाद मे बदल दिया। भाजपा कांग्रेस की इस चालाकी को नही समझ सकी और उसने भी इस मुदे को लेकर पाकिस्तान पर हमला करने तक की गंभीर मांग शुरू कर दी। कांग्रेस तो ऐसा चाहती ही थी। परिणाम हुआ कि बरसों से भारत मे बनी मुस्लिम आतंकवाद की चर्चा बिल्कुल बन्द हो गई। वैसे भी बाटला हाउस के बाद भारतीय मुसलमान बहुत सतर्क होने से कोई नयी आतंकवादी धटना नही हुई है और बम्बई की धटनाओं ने तो और भी सब कुछ अस्पष्ट कर दिया है ।

बम्बई का हमला राष्ट्रीय टकराव सिद्ध करने मे कांग्रेस का लाभ था और धार्मिक आतंकवाद सिद्ध होने से भाजपा फिर से मुस्लिम आतंकवाद का भूत खडा कर सकती थी। मेरे विचार से सच भी यही है कि यह आतंकवादी हमला पाकिस्तानी आतंकवाद न होकर धार्मिक आतंकवाद मात्र ही था। यदि किसी पाकिस्तानी सरकारी मशीनरी ने मदद भी की हो तो उसने धार्मिक जोश मे आकर ही ऐसा किया होगा। अब तो यह बात और भी ज्यादा स्पष्ट हो रही है कि आतंक के बल पर शरिया लागू करना मुस्लिम आतंकवादियो का लक्ष्य है और इस लक्ष्य को पाने मे इन आतंकवादियो को दुनिया भर के मुसलमानो की सहानुभूति मिल जाया करती है चाहे ये मुसलमान भारत के हों या पाकिस्तान के या कही और के । चुॅकि ये आतंकवादी पाकिस्तान को अपनी शरणस्थली के रूप मे उपयोग कर रहे है इसलिये पाकिस्तान पर इसके विरूद्ध दबाव भी बनना चाहिये। किन्तु इस्लामिक आतंकवाद की दिशा ही बदलकर पाकिस्तानी आतंकवाद की तरफ मोड दी जावे यह स्टैन्ड ठीक नही था। सब जानते है कि भारतीय मुसलमान पकिस्तान की अपेक्षा इस्लामिक कट्टरवाद से ज्यादा प्रभावित होता है। यदि पकिस्तान और तालिबान के बीच संघर्ष हो जाय तो भारतीय मुसलमानो का बहुमत तालिबान के ही तरफ झुकेगा चाहे पाकिस्तान का बहुमत तालिबान विरोधी ही क्यो न हो । किन्तु भाजपा यह फर्क नही कर पायी। कांग्रेस पार्टी ने योजना पूर्वक और भाजपा ने भूल वश ऐसा किया जिसका परिणाम हुआ कि भाजपा के हाथ से मुस्लिम आतंकवाद का बचा खुचा मुदा भी निकल गया। कांग्रेस के विरूद्ध मंहगाई का मुदा वैसे ही निकल चुका था और आतंकवाद का ऐसे निकल गया । चुनावों में अब इतना समय बाकी नही है कि कोई नया मुददा उठ सकेगा।

पिछले छ माह का यदि आकलन करें तो कांग्रेस पार्टी ने पूरी तरह अनुशासित, सुनियोजित तथा गंभीर निर्णय लिये और भाजपा ने तात्कालिक, अनुभव हीन, तथा फूहड तरीके से। कांग्रेस पाटी ने व्यक्तिगत नेतृत्व प्रणाली को स्वीकार कर लिया चाहे उसके गुण दोष कुछ भी क्यो

न हो। भाजपा आज तक न व्यक्तिगत नेतृत्व स्वीकार कर सकी है न सामूहिक नेतृत्व। भाजपा तो आज तक यह भी नही बता पाई कि राष्ट्रीय स्वय सेवक संघ उसका सलाहकार मात्र है या निर्णायक। ऐसी स्थिति मे किसी भी राजनैतिक दल के सामने निर्णय की कठिनाई स्वाभाविक ही है और उसी का परिणाम दिखता है कि भाजपा के सामने अगले चुनावो मे सरकार बनाना तो दूर पिछली स्थिति तक पहुॅच पाना भी कठिन हो सकता है ।

कार्यालयीन प्रश्नो के उत्तर

(ख) गोधरा रेल दुर्धटना को आपने पूरी दृढता से आक्रमण लिखा । क्या आप पूरी तरह आश्वस्त है कि आग अन्दर से न लगकर बाहर से ही लगी ?

उत्तर– आग कैसे लगी यह अनुमान का विषय है किन्तु गोधरा स्टेशन से रेल चली। थोडी दूर जाते ही मुसलमानो की एक भीड ने पत्थर बरसाने शुरू कर दिये। कुछ दूर जाकर गाडी रूकी और रेलवे सुरक्षा बल ने लाठी चार्ज करके भीड को हटाया। गाडी आगे बढी तो कई डिब्बो से चैन खींची गई और थोडी दूर जाकर गाडी पुनः रूक गई। भीड ने बाहर से हमला किया। दो डब्बो मे आग लगी एक के यात्रियो ने बुझाई और दूसरे के जल गये। चैन खीचने वाले और आग लगाने वाले दूर से आने वाले यात्री थे या पहले लाठी चार्ज के समय चढने वाले आक्रमणकारी यह अनुमान आप लगाइये। मै आश्वस्त हूॅ कि आग का सम्बन्ध आक्रमणकारियो से होना अधिक विश्वसनीय लगता है ।

(ग) अरून्धती राय ने संसद भवन पर आक्रमण पर भारत सरकार नियोजित धटना होने का संदेह व्यक्त किया। उसका क्या प्रमाण है कि उन्होने ऐसा कहा ? यदि कहा तो इसका कारण क्या हो सकता है ? उन्होने कश्मीर के संबध मे जो मत रखा उसमें आपका क्या मत है ?

उत्तर– अरून्धती राय जी ने जो संदेह व्यक्त किया है वह अफजल गुरू को बचाने मे प्रकाशित पुस्तक 13 दिसम्बर दि स्टेज केस आफ द अटैफ आन इंडियन पार्लियामेंट मे प्रकाशित उनके लेख मे पूछे गये प्रश्न संख्या पांच और छ में निहित है कि दिसम्बर तेरह के शीध्र बाद भारत सरकार ने संसद पर हमले मे पाकिस्तान का हाथ होने की धोषणा भी कर दी और बार्डर पर लाखो सैनिक भी भेज दिये। अरून्धती जी ने संदेह व्यक्त किया कि भारत सरकार ने तेरह दिसम्बर के हमले के पूर्व ही पाकिस्तान पर हमले की योजना बनानी शुरू कर दी थी। उनके ये वाक्य सिद्ध करते है कि अरून्धती जी संसद पर हुए हमले को संदेहास्पद बनाने के लिये संदेह की सीमाओं से आगे चली गई थी।

प्रश्न उठता है कि उन्होने ऐसा कहा क्यो ? इस प्रश्न का उत्तर भी कठिन काम नही। अरून्धती राय एक ऐसा नाम है जो मानवाधिकारो के लिये संधर्ष करने वालों मे सम्मान से लिया जाता है। किन्तु उनकी एक कमजोरी है कि वे स्वतंत्र न होकर एक विचारधारा से प्रतिबद्ध है । पूॅजीवाद विरोधी वामपंथी विचार धारा उन्हे उक गुट विशेष के साथ जोड कर रखती है जिस गुट की पहचान ही है अमेरिका विरोध तथा वामपंथी इस्लामिक आतंकवाद के समर्थन मे मानवाधिकार का उपयोग। उन्होने अन्य मामलो मे कई अच्छे काम किये है किन्तु वामपंथ इस्लाम और आतंकवाद यदि एक साथ जुड जावे तो उसका समर्थन करना इनकी मजबूरी हो जाया करती है। वैसे भी भारत मे जिन लोगो कोभी अन्तराष्ट्रीय पुरस्कार मिलते है और वे भी सामाजिक क्षेत्र मे उनके अधिकांश पुरस्कार मे एक गुट विशेष की सहायता बहुत काम आती है । ऐसे मददगारो की टीम के साथ कुछ साथ निभाना भी तो मजबूरी है । अरून्धती जी के कथन मे कितना उनका अपना सोच है और कितनी टीम की मजबूरी यह तो बताना संभव नही किन्तु अरून्धती राय अपने वामपंथी इस्लामिक आतंकवादी विचारों के समर्थन मे किसी भी सीमा तक हिम्मत करके तर्क की जगह कुतर्क करने के लिये हमेशा उपलब्ध रहती है , यह सही है।

उन्होने कश्मीर के विषय मे कहा कि यदि आवश्यक हो तो कश्मीर को स्वतंत्र करके या पाकिस्तान को देकर भी इस विवाद को खत्म कर देना चाहिये। कश्मीर का प्रश्न उलझा हुआ है। इस मुददे पर उनके विचार भिन्न होते हुए भी उनकी नीयत पर संदेह व्यक्त नही करते।

यदि कश्मीर समस्या पर गंभीरता से सोचें तो दोनो ही विचारो मे दम है (1) कश्मीर पर भारत का अधिकार न्याय संगत न होकर विवादास्पद है। स्वतंत्रता के समय कई सौ रियासतो को भारत, पाकिस्तान या स्वतंत्रता का विकल्प चुनने की वैधानिक छूट दी गई थी। जूनागढ, हैदराबाद और कश्मीर भारत के साथ विलय के पक्ष मे न होकर अलग राह खोज रहे थे। जूनागढ तो जल्दी ही निपट गया किन्तु हैदराबाद और कश्मीर का मामला इसलिये कुछ जटिल था कि हैदराबाद का शासक मुसलमान और जनता हिन्दू थी जबकि कश्मीर का शासक हिन्दू और जनता मुसलमान थी। हैदराबाद पर भारत ने उपद्रव कराकर फिर आक्रमण कर दिया और जीतकर अपने मे मिला लिया तो दूसरी ओर पाकिस्तान ने कश्मीर मे उपद्रव कराकर आक्रमण कर दिया और जीतने कीदिशा मे बढने लगा । हैदराबाद को तो अवसर ही नही मिला कि वह पाकिस्तान से सम्पर्क करे किन्तु कश्मीर के राजा को अवसर मिला और उसने भारत के साथ विलय कर दिया जिसे पाकिस्तान ने अस्वीकार कर दिया। भारत ने इस विलय के बाद भी संयुक्त राष्ट्र संघ का जनमत संग्रह का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया किन्तु भारत लाख प्रयत्न करने के बाद भी कश्मीरी मुसलमानो का दिल नही जीत सका। इसके विपरीत पाकिस्तान कश्मीरी मुसलमानो को कट्टरता की दिशा मे लगातार बढाता रहा । जिसके परिणाम स्वरूप भारत को जनमत संग्रह से पीछे हटने के बहाने करने पडे । भारत को कश्मीर को अपने साथ बनाये रखने के लिये कई युद्ध करने पडे, खरबों रूपया उन्हे अतिरिक्त सहायता के रूप मे खर्च करना पडा, पूरी दूनिया मे कमजोर तर्क के कारण कई बार शर्मिन्दा भी होना पडा किन्तु उसने कश्मीर को अपने साथ बनाये रखने के बदले मे सब नुकसान सहा। गंभीरता पूर्वक विचार करने पर राष्ट्रीय चिन्तन तो कश्मीर को अपने साथ रखने के पक्ष मे दिखता है और मानवीय पक्ष कश्मीर पर झुककर भी समझोते के पक्ष मे रहता है ।

यह तो कश्मीर का सैध्दान्तिक पक्ष है किन्तु इसका व्यावहारिक पक्ष इसके ठीक विपरीत है । कश्मीर का टकराव दो राष्ट्रो के बीच का टकराव न होकर इस्लामिक विस्तारवाद से भारत का टकराव है। कश्मीर तो उक्त टकराव का एक माध्यम मात्र है। पाकिस्तान कश्मीर मे संघर्ष नही कर रहा । संघर्ष तो कर रहा है विश्व इस्लामिक मूवमेंट जिसमें पाकिस्तान इस्लामिक राष्ट्र और कश्मीर सटा हुआ होने से महत्वपूर्ण पार्ट है ।

यदि कश्मीर छोड दे तो टकराव थोडा आगे बढकर पंजाब या राजस्थान मे खिसक जायगा जो ज्यादा हानिकारक होगा। कश्मीर का टकराव न्याय अन्याय के बीच न होकर न्यायी और अन्यायी के बीच है जिसमें इस्लाम का विस्तारवाद एक खतरनाक पक्ष है और उससे लडना हमारी मजबूरी है। इस्लाम को मानने वाले बडी संख्या मे धर्म के विस्तार के लिये जान देने मे संतोष का अनुभव करते है क्योकि धर्म विस्तार के लिये प्राण देने पर उन्हें धार्मिक लाभ के साथ साथ जन्नत मे कुछ ऐसी भौतिक वस्तुएॅ भी मिलने का आश्वासन है जो उनके लिये दुहरा आकर्षण का काम करती है। इसके ठीक विपरीत हिन्दू धार्मिक विस्तार से नफरत करता है । वह धर्म रक्षा के लिये तो कभी जान भी दे दे किन्तु विस्तार तो उसने सीखा ही नही । इस्लाम यह जानता है कि दुनिया मे कोई संस्कृति ऐसी नही जो किसी न किसी बहाने अनन्तकाल तक लड सके। बहुत वर्षो के बाद कही न कही हार थक कर समझौता उनका स्वभाव है । यही एक विश्वास है कि इस्लाम हमेशा संधर्ष को हर मोर्चे पर जिन्दा रखता है चाहे वह संघर्ष न्याय संगत हो या अन्याय पूर्ण । अफगानिस्तान, इराफ, इजराइल, रूस, कश्मीर चारो ओर तो उसने अनन्तकाल तक का संधर्ष छेड रखा है । ऐसे धोषित शत्रु को कश्मीर सौंपना हमारी भारी भूल मान ली जायगी। इसलिये भारत को चाहिये कि वह किसी भी स्तर से इस्लाम का यह धमंड चूर कर दे कि संघर्ष को लम्बा खींचकर वह जीत सकता है। इसके विपरीत उसे यह समझ मे आना चाहिये कि ताकत से परिस्थितियो को अपने पक्ष मे करने की आदत की पोल खुल चुकी है।

मैं स्वय पहले वैसा ही सोचता था जैसा अरून्धती जी कश्मीर के विषय मे सोचती है। धीरे धीरे मेरी धारणा बदली और उनकी नही बदली। इसका कारण भी मै समझता हॅू कि मै न तो किसी विचार धारा से प्रतिबद्ध हॅू न किसी गिरोह से धिरा हुआ हॅू किन्तु अरून्धती जी के सामने भिन्न परिस्थिति होने से उनकी कठिनाई हमे समझनी चाहिये। वे स्वतंत्र भी नही है और तटस्थ भी नही है । वे विचारक भी नही है। वे है सामाजिक समस्याओं पर संघर्ष करने वाले एक समूह की सदस्य। उनकी कोई मजबूरी भी हो सकती है। इन सबके आधार पर ही हम उनके कार्यो की समीक्षा करें।

(घ) आपने झूठ के पांव लेख मे लिखा है कि प्रचार माध्यम झूठ को सच और सच को झूठ प्रमाणित करने मे सफल है । क्या यह संभव है ? क्या आप ऐसे कुछ उदाहरण दे सकते है जिनके आधार पर भारत मे यह बात सही कही जा सकें ? ऐसे प्रयत्नो का समाज पर कितना प्रभाव पडता है ?

उत्तर– जब व्यक्ति मे वुद्धि और भावना का संतुलन गडबड हो कर किसी एक दिशा में बढने लगता है तब समाज पर भी उसका प्रभाव पडना निश्चित है। वुद्धि प्रधान व्यक्तिसमूह संचालक और भावना प्रधान संचालित की दिशा मे बढते जाते है । वुद्धि प्रधान लोग प्रचार माध्यमो का उपयोग करते है और भावना प्रधान ऐसे प्रचार से प्रभावित होते रहते है।जब वुद्धि प्रधान लोगो मे स्वार्थी तत्व अधिक हो जाते है तब ये लोग प्रचार माध्यमों का सहारा लेकर समाज मे असत्य को सत्य और सत्य को असत्य के समान स्थापित कर देते है । इस तरह जब एक बार असत्य सत्य के समान स्थापित हो जाता है तब वह समाज मे एक परिभाषा का रूप ग्रहण कर लेता है और उसे चुनौती देना बहुत कठिन हो जाता है।

सबसे चिन्ता की बात तब शुरू होती है जब निष्कर्ष निकालने मे विचार मंथन का महत्व कम होकर प्रचार की भूमिका महत्वपूर्ण हो जावे। वर्तमान समय मे विचार मंथन की भूमिका लगभग समाप्त हो गई है और प्रचार द्वारा ही विचार बन रहे है , स्थापित हो रहे है, निष्कर्ष निकाल रहे है और कार्यान्वित कर रहे है। ऐसे असत्य निष्कर्ष एक दो न होकर इनकी संख्या सैकडो मे है। ऐसे असत्य अभी भी मजबूत ही हो रहे है क्योकि उन्हे चुनौती देने वाली पहली और एकमात्र इकाई ज्ञानतत्व ही है जिसकी प्रसार संख्या इतनी कम है कि उसका कोई प्रभाव ही नही दिखता। फिर भी यह संधर्ष प्रारंभ तो हो ही चुका है।

वैसे तो पग पग पर ऐसे असत्य सत्य के समान स्थापित है जिनकी संख्या सैकडो मे है किन्तु कुछ असत्य तो समाज पर भूत की तरह चिपट गये है। एक ऐसा ही असत्य है अपराध की परिभाषा। प्रचार माध्यमो ने समाज मे इस असत्य को सत्य के समान स्थापित कर दिया है कि कानून का उल्लंधन ही अपराध है। इससे भिन्न कोई बात लोग समझते ही नही क्योकि इनके संस्कार मे ही यह बात डाल दी गई है। विल्कुल साधारण सी बात है कि व्यक्ति के मूल अधिकारों का उल्लधन अपराध, संवैधानिक अधिकारों का उल्लधन गैर कानूनी तथा सामाजिक अधिकारों का उल्लंधन अनैतिक होता है। यदि यह बात किसी को बताई भी जावे तो प्रचार माध्यमो ने मूल अधिकारो , संवैधानिक अधिकार और सामाजिक अधिकारो की परिभाषा को भी गडबड कर दिया है। इसलिये समझने मे भी कठिनाई होती है। इसी तरह पूरे समाज को यह समझा दिया गया है कि कृत्रिम उर्जा का सस्ता होना श्रमजीवियों के लिये लाभदायक है। सच्चाई यह है कि कृत्रिम उर्जा श्रम शोषक है किन्तु श्रमजीवी गरीब ग्रमीण भी कृत्रिम उर्जा के पक्ष मे ही आवाज उठाता रहता है। इसी तरह वर्ग संधर्ष को एक आवश्यक हथियार के रूप मे स्थापित कर दिया गया है। हर आदमी किसी न किसी रूप मे वर्ग निर्माण वर्ग विद्वेष मे अप्रत्यक्ष सहयोग करता रहता है किन्तु वह ऐसे हानिकारक कार्य को भी समाज हितैषी काम ही समझता रहता है क्योकि सैकडो वर्षो से उसे यह बात समझा दी गई है । ऐसी अनेक बीमारियॉ समाज मे दवा मे रूप मे प्रचलित है या की जा रही हैं जिन पर व्यापक चर्चा करनी होगी।

(च) श्री रवीन्द्र सिह पत्रकार, संवाद सरोवर , गुना , मध्यप्रदेश

प्रश्न–ज्ञान तत्व एक सौ पैंसठ मे अजमेर निवासी एम एस सिंगला जी के विचारो को पढकर ऐसा लगा जैसे वे दूसरों को ही हिंसा की प्रेरणा देते रहते है परन्तु स्वयं हिंसा कभी नही करते। वैसे भी हिसंक स्वभाव से ही डरपोक और कायर होता है । वह मजबूत की तो चापलूसी करता है किन्तु कमजोर के सामने दहाडने लगता है । जिनके पास तर्क शक्ति का अभाव होता है वे कुछ ज्यादा ही हिंसा की बात करते है।

आप जो भी कर रहे है वह अच्छा है । आप विचार मंथन द्वारा विद्वानो का मनोबल बढा रहे है। यदि आप अपनी शक्ति का कुछ भाग शिक्षा और शिक्षको के विकास के लिये करते तो अधिक अच्छा होता। शिक्षा के सम्बन्ध मे आपके विचार समझ मे नही आते।

उत्तर– सिंगला जी के विषय मे आपने क्या निष्कर्ष निकाला यह आपका और सिंगला जी का विषय है । मै अपने जीवन मे कभी कायर नही रहा । मैने जीवन भर अपराधों एव अपराधियो से मुकाबला

ही किया है किन्तु हिंसा से नही अहिंसा से । पूरा जीवन ऐसी धटनाओं से भरा पडा है जिनकी चर्चा यहॉ उचित नही।

आपने शिक्षा और शिक्षको के विकास की प्राथमिकता के लिये मुझसे कुछ करने की अपेक्षा की है । मुझे शिक्षा का भी अनुभव है और भूख का भी । मुझे शिक्षा के अतिरिक्त अन्य विषयो पर हो रहे व्यय और प्रोत्साहन का भी अनुभव है। मै यह मानता हूॅ कि यदि शिक्षा और अन्य अनेक विषयो की तुलना करे तो अन्य अनेक कार्यो की अपेक्षा शिक्षा का महत्व ज्यादा है किन्तु शिक्षा और भूख की तुलना करें तो मै भूख को अधिक महत्वपूर्ण मानता हूॅ। यदि समाज मे तीन वर्ग बनाए जाये 1 धनवान 2 शिक्षित सामान्य 3 श्रमजीवी गरीब। मै चाहता हूॅ कि एक सीमा से अधिक धन वालों की प्रगति को निरूत्साहित करना चाहिये। बीच वाले वुद्धिजीवियो के मामले मे तटस्थ रहना चाहिये और गरीबी रेखा से नीचे वाले श्रमजीवियो की सहायता करनी चाहिये। सम्पूर्ण भारत मे सब लोग शिक्षा पर खर्च बढाने की मांग करते रहते है जिनमें आप भी बढ चढकर आगे रहते है किन्तु मै हमेशा ही शिक्षा की अपेक्षा श्रम के पक्ष मे आवाज उठाता रहता हूॅ। मै जानता हूॅ कि ऐसी आवाज उठाने वाला मै बिल्कुल अकेला ही हूॅ। किन्तु मेरी आत्मा कहती है कि श्रमजीवी वुद्धिजीवी और पूॅजीपति की तुलना करते समय श्रमजीवी की अपेक्षा वुद्धिजीवी का समर्थन पाप है भले ही पूरी दुनिया ही ऐसा क्यो न करे।

किन्तु धन की अपेक्षा शिक्षा और शिक्षक को हमने जीवन भर महत्व दिया है । हमारे क्षेत्र मे आज तक जो भी विधायक या मंत्री बने वे स्कूल के शिक्षक रहे। कालान्तर मे वे दोनो ही मंत्री भी बने । रामानुजगंज मे सर्वोच्च सम्मानित पद नगर प्रमुख का है। नगरपालिका अध्यक्ष , एडिस्नल कलेक्टर या उच्च पुलिस अधिकारी से भी उॅचा। ऐसे सम्मानित पद के लिये हुए मतदान मे एक मिडिल स्कूल के गरीब शिक्षक चुने गये। आपको शिक्षक के लिये इससे ज्यादा क्या सम्मान और प्रोत्साहन हम दे सकते है। शिक्षा और शिक्षक के लिये हमारे व्यवहार मे जो स्थान है वह और दूसरो से अधिक ही है कम नही। किन्तु सुविधा के मामले मे श्रम ज्यादा उपेक्षित है । हम श्रम का पेट काटकर शिक्षा और शिक्षक का पेट भरने की नीति के पक्ष मे नही है । आशा है कि आप इस विषय को ठीक से समझेगें।

(छ) श्री प्रहलाद गिरि, निंगा, आसनसोल, बंगाल

प्रश्न– आप निस्संदेह सूक्ष्म विचारक है और स्वामी राम देव जी भी एक नये भारत और विश्व का निर्माण करना चाहते है।आपके विचार से वे समाज राष्ट्र व्यवस्था को किस ढंग से करें कि विश्व के लिये भी अनुकरणीय हो और उस आदर्श विश्व व्यवस्था मे आपका सरल बोधगम्य सूत्रो मे रचित पुनः संशोधित पुस्तक एक आदर्श संविधान बने।

दूसरा निवेदन है कि मै प्रयोग के तौर पर ही अपनी निंगा कोलियरी को शराब मुक्त करना चाहता हूॅ । यहॉ 30 प्रतिशत मुस्लिम 70 प्रतिशत हिन्दू है , कुल आबादी 40 हजार की है। यहॉ मै कौन संगठन किस ढंग से बनाउॅ ,कौन अभियान छेडू कि यहॉ शराब दुकान एव शराबी बंद हो जाये। यहॉ 40 प्रतिशत लोग शराब पीने लगे है पीने वालो मे हिन्दू अधिक है, मुसलमान अल्प। यदि कोई समिति बनाउॅगा तो उसमे भी शराबी को रखना ही पडेगा। यदि मै प्रतिवर्ष शराब न पीने वाले को शराब न पीने के कारण पुरस्कृत करू तो कैसा रहेगा। उनका नाम भी हैंड बिल मे छपवा कर बांटू या एक नियम बनवाउॅ कि शराब बंद समिति का कोई सदस्य यदि शराब पीये तो दंड लगाया जाय। वो दंड भी कैसा हो। सरकार से भी इस अभियान के लिये मै कानून मे संशोधन का आग्रह करूॅ तो कैसे करूॅ? इसकार्य के लिये आपका ही सुझाव सर्वोतम रहेगा। आप पत्र द्वारा या ज्ञानतत्व द्वारा भीं इस पर प्रकाश डाल सकते है।

उत्तर– बाबा रामदेव जी एक विख्यात तथा स्थापित सन्त है जो मै नही। रामदेव जी ने समाज की समस्याओं का कारण और समाधान अलग खोजा है और मैने अलग। सच बात यह है कि मेरा समाधान किसी भी अन्य वर्तमान नेता, महापुरूष, सन्त महात्मा से मेल नही खाता। रामदेव जी भी उन्ही मे एक है। ये लोग समाज को ठीक करना चाहते है किन्तु मै वर्तमान राजनैतिक आर्थिक सामाजिक धार्मिक व्यवस्था को सारी गडबडी का कारण मानता हूॅ समाज को नही। ये लोग व्यवस्था मे लगे इन एक करोड लोगो का ऐसा हदय परिवर्तन करना चाहते है कि निन्यान्नवे करोड लोगों को राहत मिले। मेरी समझ यह बनी है कि इन एक करोड लोगो की नीयत खराब होने से

ये जान बूझकर ऐसी गडबडी कर रहे है। इसलिये मेरे मतानुसार न निन्यान्नवे करोड को सुधारने से समस्या का समाधान होगा न एक करोड बिगाडने वाले सुधारने से सुधरेगें । जिनके सुधरने से सब ठीक होना है वे सुधर ही नही सकते तथा जिनके सुधर जाने से भी कोई विशेष परिवर्तन नही होना है उस प्रयत्न मे भले ही अन्य सब लगे हो परन्तु मै तो नही लग सकता। मेरे विचार मे एक करोड और निन्यान्नवे करोड के बीच बढी हुई दूरी को कम करना ही इसका समाधान है जिसमें मै पूरी ताकत से लगा हूँ। मै यदि रामदेव जी को समझाने मे शक्ति लगाउॅ तो वे समझने की अपेक्षा समझाने का प्रयत्न शुरू करेगे जिसमे विचार मंथन कम और प्रभाव का उपयोग अधिक होगा। वे कोई गलत तो कर नही रहे। जो भी कर रहे है वह अच्छा ही है ।यह अलग बात है कि मार्ग और दिशाएँ अलग अलग है। रामदेव जी को समझाने मे शक्ति लगाने की अपेक्षा आप जैसे समकक्ष यदि समझ गये तो अधिक लाभ होगा और तब वे भी समझ सकते है।

आप शराब बन्द करने के लिये जन जागृति करना चाहते है। यह एक समाज सेवा का काम तो है किन्तु व्यवस्था परिवर्तन का नही। मेरे चिन्तन का विषय समाज सेवा न होकर लोक स्वराज्य है । इसलिये इस संबंध मे आप क्या मार्ग पकडें इससे मै अनभिज्ञ हूँ। किन्तु इस संबंध मे सरकार से सहायता लेना तो धातक कार्य हो जायगा। ऐसे निवेदन ही तो सरकार को प्रेरित करते है कि वह समाज को गुलाम बनाती चली जाये। क्या हमारा इतना भी प्रभाव नही कि हम कुछ लोगों को शराब छोडने हेतु तैयार कर सकें और यदि इतना भी प्रभाव नही तो ऐसे काम की ठेकेदारी लेने की क्या जरूरत है? मेरे विचार से यदि सेवा कार्य मे बढने की ही इच्छा हो तो अपनी क्षमता अनुसार ही आगे आइये न कि सरकार को आमंत्रित करने की भूल पर । यदि आप लोक स्वराज्य की दिशा मे भी कुछ कर सकें तो एक अच्छा सहयोग संभव है।

(ज) श्री अमर सिह आर्य, जयपुर, राजस्थान

प्रश्न 1. – ज्ञानतत्व के अंक 167 के पूर्वाध्द मे गूंढ विचार मंथन किया गया। इसमे प्रस्तुत बिन्दुओ पर सारे कार्यकम का आधार व विश्व समस्याओ का समाधान निहित है। जो विचार आप दे रहे है वे समाज मे कितने ग्राध्य है और देश का प्रबुद्ध व आम जन इन्हे समझ पा रहा है या नही इसका 40 सालों मे कभी आंकलन की बात आयी क्या?

प्रश्न 2 – संविधान मे परिवार, गांव शामिल नही। परिवार, गांव, वार्ड को कमजोर करने का सरकार का हमेशा प्रयास रहता है।

प्रश्न 3 – समाज को तोड कर आठ आधारो पर वर्ग निर्माण कर वर्ग विद्वेष वर्ग संघर्ष की भूमि तैयार करना राज्य की सर्वोच्च प्राथमिकता है यह 60 वर्षो के अनुभव से सिद्ध है। पर क्या समाज भी ऐसा मानता है? इसका कोई अध्ययन कराया गया है या नही।

प्रश्न 4– वर्तमान विधान से इतर भी कोई व्यवस्था हो सकती है , विकल्प हो सकता है इस पर कोई एकमत विचार सामने नही आ सका। संविधान पर भिन्न मत तो आते रहे है परन्तु संविधान बदलने की बात पर कभी देश विरोधी होने, ताना शाह सम्प्रदायवादी देश को तोडने की शक्तियो के सिर उठाने , वर्ग विशेष विरोधी होने आदि के विशेषण दिये जाते रहे है परन्तु संविधान पर कभी खुली बहस नही हुई जिसमें आम नागरिक शामिल रहे हो । सरकार बहस मे आम लोगो को शामिल करने मे धबराती है मेरा ऐसा मानना है। ऐसा क्यो ? इन बिन्दुओ पर कुछ राजनेताओ बुद्धिजीवियो , समाजशास्त्री इनसे भिन्न भी मैने कुछ नौकरी पेशा, छोटे व्यापारी, अध्यापको, समाज सेवकों, सर्वोदयी कार्यकर्ताओ, अन्य संगठनो से जुडे लोगो प्रशासनिक अधिकारियो से चर्चा की तो पता लगा कि बहुत कम लोग मेरी बताई बातो से सहमत हो पायें। अधिकाश के मन मे भ्रम की स्थिति बनी हुई है । कुछ तो सरकार को ही ग्राम राज्य, स्वराज्य मानते है। बहुत कम लोग स्वराज्य को सही रूप मे समझ पा रहे है। राज्य पर समाज के नियन्त्रण की बात पर कितने सहमत है? आपका आकंलन स्पष्ट करावें

प्रश्न 5 – धर्म और विज्ञान पर गहन मंथन हुआ, मै कुछ भिन्न मत रखता हूँ आपने विज्ञान का आधार तर्क और अनुसंधान माना जब कि धर्म का आधार श्रद्धा और विश्वास। मेरे विचार मे विज्ञान तर्क अथवा सिद्धांत पर आधारित है। अंनुसंधान तो वह प्रकिया है जिस पर सिद्धांत व तर्क को परखा जाता है और शोध के परिणामों को सही या गलत ठहराया जाता है।

धर्म की कसौटी भी तर्क व अनुभूति है परन्तु धर्म को भावना का विषय बता कर शोध प्रकिया पर रोक लगा दी जाती है। धर्म क्या है इस पर कभी बहस ही नही होती जबकि यह जरूरी है । धर्म भावना का नही आचरण का विषय है, भावना से जोड कर ही धर्म को विकृति की ओर धकेल दिया गया। धर्म तर्क का विषय नही जैसी श्रद्धा वैसा माने यहा से ही मत और पाखण्ड का जन्म होता है चुंकि सत्य जैसा है वैसा मानने के सिद्धांत पर मंथन होना चाहिए उस पर ताला नही लगाना चाहिए।

धर्म से सत्य को जाना जाता है और विज्ञान से विभिन्न पदार्थो के बारे मे जानकारी प्राप्त की जाती है। जब विज्ञान का शोध व धर्म का अन्वेषण सही दिशा मे बढता है तो पूरक रहते है और जब दिशा बदल जाती है तो एक दूसरे की दूरी बढ जाती है। यही धर्म और विज्ञान की त्रासदी है। दोनो गलत दिशा मे बढ रहे है। उसकी और स्पष्ट व्याख्या कराकर अनुग्रहित करें।

उत्तर–1. उन्नीस सौ चौरासी तक मैने राज्य व्यवस्था के माध्यम से समाज की समस्याओं के समाधान के प्रयत्न किये। असफल होने पर पंद्रह वर्षो तक जंगल मे बैठकर अनुसंधान किया। नवंबर निन्यान्नवे तक निष्कर्ष निकला कि भारतीय संविधान ने लोकतंत्र की परिभाषा ही चुपचाप बदल दी है। चार नवंबर निन्यान्नवे के बाद पांच वर्षो तक मैने रामानुजगंज नगर पंचायत मे लोक स्वराज्य का प्रयोग किया। दो हजार पांच से आठ तक के चार वर्षो तक दिल्ली मे रहकर अन्तिम निष्कर्ष पर विचार किया और पच्चीस दिसम्बर आठ को दो दिशाओं मे सकियता का अन्तिम निष्कर्ष निकला 1 मानसिक व्यायाम 2. लोक स्वराज्य आंदोलन। पचीस दिसम्बर तक तो निष्कर्ष ही अन्तिम नही था। अब निष्कर्ष अन्तिम रूप से निकला है । अब आगे पता चलेगा कि यह विचार कितना ग्राध्य है कितना अग्राध्य।

2. सरकार हमेशा ही परिवार ,गांव समाज को कमजोर करने का प्रयास करती है आपके इस निष्कर्ष से मेरी पूरी सहमति है।

3. राज्य और राज्य से जुडे लोग परिवार व्यवस्था समाज व्यवस्था को कमजोर करने के उदेश्य से धर्म जाति भाषा आदि आठ वर्ग विद्वेष वर्ग संधर्ष के उपायो का उपयोग करते है यह सच्चाई समाज अब तक नही समझ पाया है । यह बात समाज को समझाने की आवश्यकता है।

4. सरकार से जुडे लोग संविधान पर खुली बहस से इसलिये कतराते है कि वर्तमान संविधान मे ही उनकी सुरक्षा है । यदि संविधान के दोष स्पष्ट हो जायगें तो राज्य से जुडे लोगो की पोल खुल जावेगी। समाज मे संविधान चर्चा अब तक नगण्य है किन्तु धीरे धीरे बढ रही है। रामबहादुर राय जी तो इस संबंध मे प्रतिमाह एक गोष्ठी करते रहते है। काम कठिन है किन्तु कोई अन्य मार्ग नही है ।

5. धर्म के दो अर्थ मैने पिछले अंक मे बताये है 1 गुण प्रधान 2 संगठन प्रधान । यदि पहले अर्थ की चर्चा करे तो विज्ञान संबंधी आपकी व्याख्या ठीक है और संगठन संबंधी अर्थ करे तो मेरी व्याख्या ठीक है ।

पचीस दिसम्बर को मैने समाधान आप सबको बता दिया है आप आगे काम शुरू करिये। मेरा जहॉ सहयोग चाहिये मै आपके साथ हूॅ।

5. डा. महावीर सिंह अध्यक्ष उत्तर प्रदेश सर्वोदय मंडल बरेली

विचार– अहिंसक कांति के अग्रदूत महात्मा गांधी अब और अधिक प्रासंगिक होते जा रहे है। नागपुर मे भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी मे धोषित किया गया कि गांधी का विकास मांडल ही सर्वश्रेष्ठ है ।

गांधी जी के विकास माडल के केन्द्र मे व्यक्ति और नैतिकता है । गांधी जी विकास का अभिप्राय सच्ची सभ्यता मानते थे। वे कहते थे " सभ्यता वह आचरण है जिससे मनुष्य अपना फर्ज अदा करता है। फर्ज अदा करने का मतलब है नीति का पालन करना नीति के पालन का अर्थ है अपने मन और इंद्रियो को वश मे करना।"

बापू आवश्यकताओ को सीमित रखने को सुख का आधार मानते थे। वे अमर्यादित तृष्णा वृद्धि को विकास नही वरन विनाश मानते थे। बापू कहते थे " धरती मॉ मे समस्त प्राणियो की आवश्यकता पूर्ति की क्षमता है , परन्तु वह एक व्यक्ति की भी तृष्णा को शांत नही कर सकती। "

गांधी जी ने ऐसा विकास माडल विकसित किया था जिससे सब को रोजगार मिले जिससे लोग अपनी भोजन वस्त्र मकान शिक्षा और स्वास्थ्य की आवश्यकता पूर्ति मे स्वावलंबी हों। जिससे अमीर गरीब का अंतर न बढे जिसमे पर्यावरण का क्षरण न हो , जिसमे परस्पर प्रेम और नैतिकता मे वृद्धि हो तथा लोग निरोगी और संतुष्ट हो। इन सब महत्वपूर्ण आशाओ की पूर्ति कृषि कुटीर उधोग वाली शरीर श्रम प्रधान अल्प पूॅजी वाली विकेद्रित अर्थ व्यवस्था से ही हो सकती है । यही गांधी जी का सर्वश्रेष्ठ विकास माडल था। गांधी जी के अनुयायी विद्वान शूमाखर कहते है '' लधु ही सुंदर है ''

अब देखना है कि संध परिवार पूॅजीवाद से गांधी मार्ग की ओर कब बढेगा ?

(झ) श्री धर्मशील चतुर्वेदी उत्तर बेनिया नाग , वाराणसी 221001

प्रश्न— ज्ञान तत्व मिलता है । मै राष्टीय पुनरोत्थान के आपके विराट यज्ञ के प्रति समर्पित हूॅ। आपके माघ्यम से विचारको के लिए एक प्रश्न रखना चाहता हूॅः—

मार्क्सवाद अपने आर्थिक दर्शन मे असफल रहा, पूंजीवाद की असफलता या कहें खोखलापन इस विश्वव्यापी मन्दी के रूप मे सामने है। अब तो लगता है गांधी का आर्थिक चिन्तन ही एकमेव सर्वथा सुरक्षित अर्थनीति है जिस पर गहन चिन्तन होना चाहिए।

सुरक्षा पेंशन संबंधी आचार्य पंकज के विचार गम्भीर मनन के लिए बाघ्य करते है इसलिये तत्काल कुछ कहने की स्थिति मे नही हूॅ।

उत्तर — मै चतुर्वेदी जी के विचार से सहमत हूॅ कि असफल सिद्ध मार्क्सवादी अर्थ व्यवस्था तथा असफलता की ओर अग्रसर पूॅजीवाद के विकल्प के रूप मे गांधीवादी अर्थ व्यवस्था पर विचार मंथन होना चाहिये किन्तु मै गांधीवादी अर्थ व्यवस्था को केन्द्र मे रखकर कोई संघर्ष, कार्यकम या योजना पर सकियता के विरूद्ध हूॅ। मेरे विचार मे गांधी के बाद का सर्वोदय यहीं सकियता की भूल कर रहा है। गांधी जी राजनैतिक आर्थिक सामाजिक तथा धार्मिक विषयों पर संतुलित चिन्तन तथा सकियता में निपुण थे। राजनीतिज्ञ पूरा जोर देता है कि समाज आर्थिक सामाजिक धार्मिक विषयों पर तो चिन्तन भी करे तथा सकिय भी रहे किन्तु राजनैतिक संवैधानिक विषयो पर ज्यादा माथापच्वी न करके वह राजनेताओ के लिये छोड दे । राजनीतिज्ञ पूरा जोर देता है कि समाज आर्थिक सामाजिक धार्मिक विषयो पर तो अधिक से अधिक आन्दोलन करे किन्तु राजनैतिक विषयो पर आन्दोलित न हो। दुर्भाग्य से हमारे सर्वोदयी मित्र उनके जाल मे फंसकर गांधी के राजनैतिक सोच पर तो खानापूर्ति करते है किन्तु सामाजिक आर्थिक विषयो पर खूब चर्चा भी करते है और सकिय भी रहते है । गांधी जी की सर्वोच्च प्राथमिकता रही है राजनैतिक आजादी। शेष आर्थिक सामाजिक धार्मिक आजादी उसके बाद है। गांधी के बाद जय प्रकाश के आंशिक प्रयत्न को छोडकर कभी सर्वोदय ने राजनैतिक आजादी को सर्वोच्च प्राथमिकता नही दी। गांधी जी के विकास माडल का पहला सूत्र था '' राज्य की गुलामी से अधिकतम स्वतंत्रता का संघर्ष ''। इस संघर्ष के लिये नैतिकता और चरित्र को आधार बनाना चाहिये। हमारे गांधीवादी मित्र राज्य और राजनीति से निरपेक्षता की बात करते है जबकि गांधी जी ने स्वतंत्रता की बात की थी। बल्कि उन्होने तो राजनीति निरपेक्षता का विरोध तक किया था। अब यदि हम उनको मानने वाले लोग स्वतंत्रता और निरपेक्षता का अन्तर ही न समझें तो यह हमारा दोष है, गांधी का नही। जब तक हम राजनैतिक गुलामी से मुक्त नही हो जाते तब तक चरित्र और नैतिकता को सर्वोच्च प्राथमिकता मानकर सकियता या आंदोलन हमारी कायरता की राह है। आज राज्य लगातार शक्तिशाली होता जा रहा है। समाज और व्यक्ति की राज्य पर निर्भरता बढती जा रही है । प्रसिद्ध गांधीवादी ठाकुर दास बंग ने चरित्र और नैतिकता को आधार बनाकर लोक स्वराज्य के लिये सर्वोच्च सकियता की योजना प्रस्तुत की है। ऐसे समय मे बंग जी की लोक स्वराज्य योजना के विरोधी गांधीवादी सर्वोदयी नैतिकता ,चरित्र , स्वदेशी जैसे आर्थिक सामाजिक , धार्मिक मुददो को आगे उछालकर राज्य की ढाल बनें और बंग जी की लोक स्वराज्य योजना का किसी न किसी बहाने से विरोध करें तो ऐसे गांधी का नाम उपयोग करके समाज मे भ्रम फैलाने वालो को हम क्या कहें? गाधी जी ने तो संघर्ष की एक स्पष्ट राह बताई है। अब यदि कोई राही राज्य से संघर्ष की राह छोडकर अपनो से ही संघर्ष की राह दिखाना शुरू कर दे तो ऐसे व्यक्ति को हम राही माने या राह विरोधी यह समझने की आवश्यकता है।

आप दोनो ने गांधी जी की आर्थिक नैतिक सोच का जो विवरण दिया है वह राजनैतिक संघर्ष का सहायक होना चाहिये न कि मौलिक। जब मुझे आभास होता है कि गांधी जी के नैतिक सामाजिक आर्थिक विचारो को सुविधा जनक कार्य मानकर प्राथमिकता देनी शुरू कर दी जाती है तब मुझे चिन्ता भी होने लगती है और संदेह भी। जब तक बंग जी दुर्गा प्रसाद जी, खन्ना जी , त्यागी जी अमरनाथ भाई आदि की टीम ने पहल नही की थी तब तक तो मुझे पहल का अभाव दिखता था किन्तु अब पहल के बाद भी कोई इस योजना का विरोध करे तो उसकी नीयत मे ही खोट है ऐसा माना जाना चाहिये।

आपने जो व्याख्या की है उससे मै सहमत हूॅ। किन्तु सभी राजनैतिक दलो का समान उदेश्य है '' गांधी के नाम पर समाज को राजनैतिक विचार मंथन की राह से भटकाकर नैतिकता चरित्र आर्थिक सामाजिक विषयों पर विचार मंथन या संघर्ष की राह मे सक्रिय करना''। इस प्रयत्न से राज्य निष्कंटक होता है । ऐसे प्रयत्न में कांग्रेस साठ वर्षो तक समाज को धोखा देती रही है और भाजपा ने भी अब गांधी के नाम की उपयोगिता समझ ली है। भाजपा की कभी कोई स्वतंत्र आर्थिक सोच नही है। भाजपा देश काल परिस्थिति अनुसार पूॅजीबाद , समाजवाद , गांधीवाद के आर्थिक चिन्तन को समय समय पर अल्प काल के लिये उधार लेती रही है। हम लोग ऐसे राजनैतिक दलो के आर्थिक रंग बदलते बयानों से सतर्क रहें तो अच्छा है।

आर्थिक मामलो मे मौलिक सोच तीन है 1. पूॅजीवाद जो सम्पत्ति की पूर्ण स्वतंत्रता को स्वीकार करके सम्पत्ति व्यक्तिगत मानता है 2. साम्यवाद जो सम्पत्ति को पूरी तरह राज्य की मानकर उस पर किसी तरह का व्यक्तिगत अधिकार मानता ही नही। 3. गांधीवादी जो सम्पत्ति को समाज की मानकर व्यक्ति को उसका ट्रस्टी स्वीकार करता है। इन तीनो मे गांधीवाद का परीक्षण आज तक नही हुआ। गांधीजी के ट्रस्टी शिप के सिद्धात की कोई सरल व्याख्या का भी अभाव रहा है। यदि वे जीवित रहे होते तो संभव है कि कुछ और साफ समझ मे आता। किन्तु उसका अब कोई हल नही। मैनें अपने चिन्तन तथा देश काल परिस्थिति के अनुभव के आधार पर एक चौथा निष्कर्ष निकाला है। जिसके अनुसार सम्पत्ति न व्यक्ति की होगी न राज्य की। होगी वह समाज की। समाज व्यवस्था की पहली मान्य इकाई परिवार है और उसके बाद गांव । मेरे विचार मे व्यक्तिगत सम्पत्ति पर पूर्ण प्रतिबंध लगाकर उसे इस प्रकार व्यक्तिगत किया जाये कि व्यक्ति का परिवार छोडते समय ही उसका व्यक्तिगत अधिकार हो । शेष समय मे न उसका अधिकार हो न स्वामित्व। इस विषय पर संकेत ही पर्याप्त है। अधिक विवेचना अलग प्रश्नोत्तर से की जा सकती है । इस तरह आर्थिक मामलो मे मौलिक विचार मंथन करने की आवश्यकता है । जिसमे गांधी जी की सोच भी मौलिक स्थान रखती है।

(ट) प्रश्न – श्री कृष्ण कुमार जी सोमानी, बम्बई

ज्ञान तत्व एक सौ उन्हत्तर में आपने मेरे पत्र का उत्तर दिया। लगता है कि आपसे कही भूल हुई है । मै भी मानता हूॅ कि व्यक्ति को सुधारने की अपेक्षा व्यवस्था को सुधारना अधिक परिणाम दायक होता है। अनेक इमानदार राजनेता भी पार्टी फड के लिये अपने साथियों द्वारा किये गये भष्टाचार पर आंख फेरते रहे है। इस बीमारी की रोकथाम के लिये ही मै पंचायती राज का पक्षधर हूॅ। किन्तु मेरे विचार मे यदि चुनाव प्रणाली को ठीक ठाक किये बिना ही पंचायती राज आ गया तो पंचायतो मे भी भ्रष्ट लोग बैठ जावेगे और भ्रष्टाचार करेंगे।

आपने राष्ट्रपति के वेतन वृद्धि को आधार बनाया वह ठीक नही । पचास वर्षो मे न्यायाधीशो के वेतन नही बढने के कारण ही भ्रष्टाचार बढा । वैसा ही सब जगह संभव है।

आपने मेरे विषय मे निष्कर्ष निकाला है कि मै राजनेताओ के पक्ष मे हूॅ। सच्चाई यह है कि मै पूरी तरह उनके विरूद्ध हूॅ।

फिर भी मै आप द्वारा प्रतिपादित अहिसा की अवधारणा से सहमत नही । यदि कोई समझाने बुझाने से न माने तो उसे ताकत से मनाना एक उचित समाधान है भी और माना भी जाता है। इतिहास मे अनेक ऐसे उदाहरण भरे पडे है । इसी तरह मै राष्ट्र से समाज को बडा मानने की धारणा से भी सहमत नही हूॅ । मै मानता हूॅ कि अब तक कोई विश्व व्यवस्था बन ही नही पाई है तो राष्ट्र से उपर किसी सरकार या व्यवस्था का आधार ही संभव नही।

उत्तर— पंचायती राज दो प्रकार का है 1 लोकतंत्र मे पंचायती राज 2 लोक स्वराज्य मे पंचायती राज । लोकतंत्र मे पंचायती राज्य व्यवस्था मे पंचायतो को अधिकार तथा दायित्व राज्य द्वारा दिये जाते है तथा उन पर अनुशासन राज्य का होता है, नागरिको का नही। लोकस्वराज्य के पंचायती राज्य मे पंचायतो का अधिकार तथा दायित्व नागरिको द्वारा दिये जाते है तथा अनुशासन भी सरकार का न होकर नागरिको का ही होता है । लोक तांत्रिक प्रणाली मे चुनाव प्रणाली का सीमित महत्व ही होता है निर्णायक नही। मै लोक स्वराज्य प्रणाली वाले पंचायती राज्य की चर्चा कर रहा हूँ।

लोकतांत्रिक पंचायती राज मे भष्टाचार बढ सकता है किन्तु बढने धटने की बात ठीक से समझनी होगी। वर्तमान केन्द्रित व्यवस्था मे यदि सौ लोग मिलकर सौ करोड का भ्रष्टाचार करते है तो प्रति व्यक्ति एक करोड रूपया हुआ। पंचायती राज व्यवस्था मे केन्द्रित व्यवस्था की अपेक्षा सौ गुना अधिक लोगो की भूमिका होगी। हो सकता है कि ये दस हजार लोग मिलकर दो सौ करोड का भ्रष्टाचार कर लें। समझना होगा कि भ्रष्टाचार धटा या बढा। अधिकार और दायित्व जितने ही कम होंगे उतना ही भ्रष्टाचार कम होगा। मेरे विचार मे केन्द्रित भ्रष्टाचार की अपेक्षा विकेन्द्रित भ्रष्टाचार कम धातक है। इसलिये मै जब तक लोक स्वराज्य व्यवस्था नही आती तब तक के लिये भी पंचायती राज का ही पक्षधर हूँ।

आपका मानना है कि न्यायाधीशो के वेतन पचास वर्षो मे नही बढे। यह बात सही नही है। उनके वेतन भत्ते भी समय समय पर पुनरीक्षित होते रहे है । मै समझता हूँ कि यदि न्यायाधीशो के वेतन भत्तो का न बढना भष्टाचार बढने का कारण है तो जिनके भत्ते खूब बढे उनमे और अधिक भ्रष्टाचार बढने का कारण क्या है ? आपका मानना है कि भ्रष्टाचार राजनेताओ की मजबूरी है। यदि एक सर्वे किया जाय कि यदि चुनाव खर्च न हो तो कितने प्रतिशत राजनीतिज्ञ भ्रष्टाचार नही करेगें तो ऐसा प्रतिशत बहुत कम ही होगा। भ्रष्टाचार प्रवृति है जो अधिकार पाकर तेजी से बढती है और अधिकार कम होने से छटपटाकर सूख जाती है । भष्टाचार को किसी मजबूरी से जोडना ठीक नही।

मेरा मन यह है कि किसी अपराधी को दण्ड देने के लिये किसी व्यवस्था की आवश्यकता है । समाज को सीधा दण्ड देने की सलाह के मै विरूद्ध हूँ। आप भी जीवन मे कभी सीधा दण्ड दिये नही है किन्तु दूसरो को हिसा के लिये प्रोत्साहित करते रहते है जो मै नही करता। दण्ड देना व्यवस्था का काम है । यदि व्यवस्था वैसा नही करती तो व्यवस्था को बदला जाय नकि अव्यवस्था का समर्थन किया जाय। अभी व्यवस्था को बदलना संभव है इसलिये मै अराजकता के विरूद्ध हूँ। सिंगला जी अजमेर वाले भी आपके ही मत के है । वे भी हिंसा नही करते किन्तु दूसरो को हिंसा के लिये प्रोत्साहित करते रहते है । मै उससे सहमत नही रहा ।

राष्ट्र और समाज के विषय मे भी सोचने की जरूरत है। मेरे विचार मे समाज की भिन्न भिन्न इकाइयो मे व्यक्ति परिवार गांव जिला प्रदेश और राष्ट्र शामिल होते है। विचारणीय प्रश्न यह है कि राष्ट्र अपनी अपनी अन्य इकाइयों का पूरक है या मालिक । यदि व्यक्ति परिवार गांव आदि के आन्तरिक मामलो मे राष्ट्र या राज्य को निर्णायक अधिकार प्राप्त है तो मै इसके विरूद्ध हूँ। राष्ट्र स्वय समाज व्यवस्था का एक धटक है न कि मालिक। परिवार गांव जिले राष्ट्र से । समाज का अर्थ सिर्फ विश्व व्यवस्था ही नही है। समाज का अर्थ है व्यक्ति ,परिवार , गाव ,जिला प्रदेश राष्ट्र आदि का अपना अपना स्वतंत्र अस्तित्व भी और मिला हुआ अस्तित्व भी । राष्ट्र को बडा मान लेने से समाज के अन्य धटको के स्वतंत्र अस्तित्व की भावना कमजोर हो जाती है । साथ ही इससे विश्व व्यवस्था के मार्ग मे भी बाधा आती है इसलिये मैने यह विचार दिया है ।